Cosmos An International Journal of Art & Higher Education
A Refereed Research Journal
Vol 6/No 2/ Jul – Dec 2017 ISSN: 2319-8966

वाक्य विज्ञान का अधययन

अमरेन्द्र भूषण पाण्डेय
शोधकर्त्ता, ओपीजेएस यूनिर्व्हसिटी, चूरू, राजस्थान
डॉ0 सुमित्रा चौधरी
शोध निर्देशक, ओपीजेएस यूनिर्व्हसिटी, चूरू, राजस्थान

सारांश

वाक्य विज्ञान में वाक्य के गठन अथवा 'पद' से वाक्य बनाने की प्रक्रिया का वर्णानात्मक, तुलनात्मक तथा एतिहासिक द्रष्टि से अध्ययन किया जाता है | वर्णानात्मक भाषा – विज्ञान में काल के किसी बिंदु पर किसी एक भाषा के वाक्यों का अध्ययन किया जाता है | तुलनात्मक भाषा – विज्ञान काल – विशेष में दो अथवा अधिक भाषाओँ के वाक्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है | ऐतिहासिक भाषा – विशेष के विभिन्न कालों में प्राप्त वाक्यों का अध्ययन कर उसका ऐतिहासिक विकास जानने का प्रयास किया जाता है | यहाँ वाक्य के अध्ययन से तात्पर्य वाक्य और उसके सभी अंगों; पदबंधों; उपवाक्यों; रचना, अर्थ आदि की द्रष्टि से वाक्य – प्रकार आदि के अध्ययन से है|

मूल शब्दः वाक्य, भाषा

प्रस्तावना

वाक्य की परिभाषा देते हुए कामताप्रसाद गुरु ने कहा है, "एक विचार पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द – समहू को वाक्य कहते हैं|" पतंजलि भी पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द – समहू को वाक्य मानते थे | इन परिभाषाओं में दो बातें विशेष रूप से विचारणीय हैं – 1. पूर्णता और 2. शब्द समहू | वाक्य में पूर्णता से तात्पर्य क्या है? हम जानते हैं कि हम अपने भाव या विचार दो-तीन-चार वाक्यों अथवा कभी-कभी और भी अधिक वाक्यों में पूर्ण कर पाते हैं | यों, मनोवेज्ञानवेत्ता तो इस बात को भी सत्य नहीं मानते | उनके अनुसार, पूरे जीवन भर मनुष्य एक ही भाव को व्यक्त करता है| यदि हम इस सीमा तक न भी जाएँ तब भी यह तो सत्य है कि एक वाक्य में अपना भाव पूर्णता के साथ हम प्राय: प्रकट नहीं कर पाते| इसी प्रकार, 'शब्द समहू' भी विचारणीय है | बातचीत में हम प्राय: एक शब्द के वाक्य का प्रयोग देख सकते हैं |

प्रश्न – तुम इस समय कहाँ जा रहे हो?

उत्तर- कालेज|

प्रश्न- दोपहर बाद तुम्हें कहाँ जाना है?

उत्तर- बाजार |

प्रश्न- क्या तुम आज मेरे साथ राम के घर चल सकते हो?

उत्तर- नहीं |

इन तीनों उत्तरों में वक्ता अपनी बात एक शब्द में कहता है और वाक्य की उपर्युक्त परिभाषा की द्रष्टि से यह पूर्णता की कसौटी पर भी खरा उतरता है, तब क्या इसे वाक्य नहीं कहा जाएगा | स्पष्ट है कि ये भी वाक्य ही हैं, जिनमें शेष पदों का अध्याहर हो गया है |

इस दष्टि से वाक्य की उपर्युक्त परिभाषाएं उपयुक्त नहीं मणि जा सकतीं| वाक्य की कामचलाऊ परिभाषा डा. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में इस प्रकार दी जा सकती है, "वह अर्थवान ध्वनी-समुदाय, जो पूरी बात या भाव की तुलना में अपूर्ण होते हुए भी अपने आपमें पूर्ण हो तथा जिसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से क्रिया का भाव हो, वाक्य है|" डा. तिवारी के ही शब्दों में यह परिभाषा के अभाव में काम दे सकती है|"

साहित्य की समीक्षा

आशुतोष कुमार पांडे, (2015) द एक विधेय के अनुभवजन्य तर्क को सिंटैक्टिक विषय गुणों के साथ गैर–नाममात्र डीपी के रूप में महसूस किया जा सकता है। हिंदी–उर्दू सहित कई दक्षिण एशियाई भाषाओं में मूल विषय निर्माण पाए जाते हैं। नाममात्र / उन्मूलन विषयों के विपरीत, जिनके संरचनात्मक मामले हैं, एक विशिष्ट विषय की उपस्थिति एक विशिष्ट जड़ से जुड़े एक अंतर्निहित मामले के कारण होती है, जैसे कि कपाी–दं 'देखा जाना, प्रतीत होना' या जटिल विधेय चेंदक जैसे, प्रसन्न होना '। कंजपअमी और 'चेंदकांत–दं' जैसे सकर्मक समकक्षों के साथ संरचना में विपरीत विषय वाक्य विपरीत होते हैं, जिनमें विषय के लिए एक विषयगत विषयगत भूमिका होती है। ये वाक्य संक्रमणीय वेक्टर क्रियाओं (हुक 1979, बट 1995) के साथ संयोजन करते हैं, जो कि डायवर्टिव विषय विधेय के विपरीत होते हैं, जो अकर्मक वेक्टर क्रियाओं के साथ संयोजन करते हैं। असल में,वे अकर्मक

अन–अभियोगात्मक क्रियाओं की तरह व्यवहार करते हैं, सिवाय इसके कि वे शब्दार्थ रूप से उभयलिंगी (हुक 1990) हैं। गोताखोर अनुभवकर्ताओं के विषय गुणों में विषय–उन्मुख रिफ्लेक्सिव्स के एंटीकेडेंट शामिल हैं, और संयुग्मक कृदंत–के–प्रो विषय को बाध्यकारी के रूप में बाध्यकारी करते हैं विषयों ओ। लेकिन गोताखोर निर्माण भी अनुभवी और उत्तेजना / विषय के व्याकरणिक कार्यों को उलट सकते हैं, जिससे उत्तरार्द्ध व्याकरणिक विषय बन जाएगा। यह उलट–पुल–ना 'मैनेज' जैसे विषय–उन्मुख मोडल के साथ अलग–अलग अवरोधों की अनुमति दे सकता है, या असीम पूरक के साथ अधिक व्याकरणिक वाक्य बना सकता है। इस तरह के उत्क्रमण को इतालवी, आइसलैंडिक और मराठी से जाना जाता है, जिसमें व्याकरणिक कार्य की वैकल्पिकता विभिन्न तरीकों से प्राप्त होती हैः विभिन्न फ्रेम, विभिन्न मौखिक अनुमान और पूरी तरह से अलग संरचनाएं। यहाँ मैं प्रस्ताव है कि संप्रदान कारक विषय विधेय में नदंबबनेंजपअम क्रियाएं हैं वी.पी., जो कमजोर चरण बनाते हैं। इस तरह, या तो स्पेसियर / एक्सपीरियंस या थीम ईपीपी को चरण प्रभावहीनता स्थिति का उल्लंघन किए बिना स्पेसिफिक / टेंस पर ले जाकर संतुष्ट कर सकता है।

अमित शर्मा, (2014) शास्त्रीय आत्मकथा को मर्दाना, ऑक्सिडेंटल, बुर्जुआ सांस्कृतिक उत्पादन के एक प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया था। जीवन लेखन और उनका अध्ययन एक आत्मकथा की एक कठोर धारणा से एक ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण व्यक्ति की स्वतः–कथात्मक जीवन कहानी के रूप में विकसित हुआ, जिसमें आत्म–व्यक्त जीवन–कहानी की अधिक उदार परिभाषा की आवश्यकता होती है। आत्मकथा पर बहस में नारीवादी और उपनिवेशवादी आलोचक मुखर थे, और यह उनके महत्वपूर्ण योगदान के कारण है कि आत्मकथा के अध्ययन में यह महत्वपूर्ण विकास हुआ। आत्मकथा के किसी न किसी रूप में अस्पष्ट रूप से इंट्रा–शैली के रूप में इसका वर्गीकरण होता है। जीवन लेखन में तथ्य और काल्पनिक लेखन के साहित्य के बीच एक आदमी की जमीन पर कब्जा कर लिया गया है, और यह सीमित स्थिति, शायद, कई का प्रतिनिधित्व करने के लिए इन लेखन को वैध बनाती है, आत्मकथाकार की बदलती और अक्सर विरोधाभासी पहचान। ऐसा लगता है कि जीवन लेखन के अंतर्निहित सीमांत चरित्र 'तरल आधुनिकता' (ज़िग्मंट बूमन) की चुनौतियों से मिलते हैं, जो निरंतर

परिवर्तन की विशेषता है जो स्वयं के अधीन है। 1990 के दशक के मध्य और पहले दशक में महिलाओं की आत्मकथाओं की संख्या में अचानक वृद्धि हुई 2000 का दशक, हिंदी में एक नया विकास है, जीवन लेखन और महिला लेखन दोनों में। यह अध्ययन बताता है कि महिला आत्मकथाकार हिंदी में आत्मकथा की शैली को अपनाने और विकसित करने के लिए कई पहचान के साथ स्वयं की धारणाओं पर बातचीत करती है। लिंग, धर्म, जाति, वर्ग, जातीयता, नस्ल, कामुकता और उम्र की परस्पर क्रिया के कारण हिंदी महिलाओं की आत्मकथाएँ 'अंतर के बहुवचन' का प्रतीक हैं, उनकी कई पहचानों को आकार देने वाले अन्य कारकों के बीच, जो उन्हें केंद्र में एक साथ या मार्जिन पर पहचानते हैं। इन दो चरम सीमाओं के बीच में। महिला लेखकों द्वारा अपनी आत्मकथाओं में लागू की गई कथात्मक रणनीतियाँ उनकी बहुस्तरीय, सीमांत पहचानों के परिणामस्वरूप होने वाले तनावों पर बातचीत करती हैं और इस प्रश्न के अंत में लेखक आत्मकथा के पारंपरिक रूप के भीतर संशोधनों को नियुक्त करते हैं।

वाक्य की आवश्यकताएँ

वाक्य की पाँच आवश्यकताएँ मानी जाती हैं-

1. सार्थकता- इसका तात्पर्य है कि वाक्य के पद सार्थक होने चाहिए, साथ ही सार्थक पदों से बनी रचना भी सार्थक होनी चाहिए| यदि रचना सार्थक नहीं होगी तो भाषा का मूल उद्देश्य 'विचारों का आदान-प्रदान' ही संभव नहीं होगा और इसलिये ऐसी रचना को वाक्य कह पाना संभव न होगा|

2. योग्यता –वाक्य में जो बात कही गई है, उसका तार्किक धरातल पर सही होना भी अनिवार्य है| उदाहरणार्थ- 'चाय खाई', यह वाक्य नहीं है क्योंकि चाय खाई नहीं जाती बल्कि पी जाती है।

3. आकांक्षा- 'आकांक्षा' का अर्थ है 'इच्छा', वाक्य अपने आप में पूरा होना चाहिए। उसमें किसी ऐसे शब्द की कमी नहीं होनी चाहिए जिसके कारण अर्थ की अभिव्यक्ति में अधूरापन लगे। जैसे पत्र लिखता है, इस वाक्य में क्रिया के कर्ता को जानने की इच्छा होगी। अत: पूर्ण वाक्य इस प्रकार होगा- राम पत्र लिखता है।

4. निकटता- बोलते तथा लिखते समय वाक्य के शब्दों में परस्पर निकटता का होना बहुत आवश्यक है, रूक-रूक कर बोले या लिखे गए शब्द वाक्य नहीं बनाते। अत: वाक्य के पद निरंतर प्रवाह में पास-पास बोले या लिखे जाने चाहिए।

5. पदक्रम- वाक्य में पदों का एक निश्चित क्रम होना चाहिए। 'सुहावनी है रात होती चाँदनी' इसमें पदों का क्रम व्यवस्थित न होने से इसे वाक्य नहीं मानेंगें। इसे इस प्रकार होना चाहिए- 'चाँदनी रात सुहावनी होती है'।

6. अन्वय- अन्वय का अर्थ है- मेल। वाक्य में लिंग, वचन, पुरुष, काल, कारक आदि का क्रिया के साथ ठीक-ठीक मेल होना चाहिए; जैसे- 'बालक और बालिकाएँ गईं', इसमें कर्ता क्रिया अन्वय ठीक नहीं है। अत: शुद्ध वाक्य होगा 'बालक और बालिकाएँ गए'।

उपसंहार

वाक्य -जैसे है। कहलाता वाक्य समूह-शब्द वाला करने प्रकट से पूर्णता को विचार एक -1. श्याम दूध पी रहा है। 2. मैं भागते गया। थक भागते-3. यह कितना सुंदर उपवन है। 4. ओह निकले प्राण कारण के गरमी तो आज ! हैं। रहे जा5. वह मेहनत करता तो पास हो जाता।

ये सभी मुख से निकलने वाली सार्थक ध्वनियों के समूह हैं। अतः ये वाक्य हैं। वाक्य भाषा का चरम अवयव है। वाक्य के दो अंग है:-

उद्देश्य- जिसके बारे में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे- अनुराग खेलता है। सचिन दौड़ता है। इन वाक्यों में 'अनुराग' और 'सचिन' के विषय में बताया गया है। अत: ये उद्देश्य हैं। इसके अंतर्गत कर्ता और कर्ता का विस्तार आता है जैसे- 'परिश्रम करने वाला व्यक्ति सदा सफल होता है।' इस वाक्य में कर्ता (व्यक्ति) का विस्तार 'परिश्रम करने वाला' है।

1. अर्जुन ने जयद्रथ को मारा।
2. कुत्ता भौंक रहा है।
3. तोता डाल पर बैठा है।

इनमें अर्जुन ने, कुत्ता, तोता उद्देश्य हैं; इनके विषय में कुछ कहा गया है। अथवा यों कह सकते हैं कि वाक्य में जो कर्ता हो उसे उद्देश्य कह सकते हैं क्योंकि किसी क्रिया को करने के कारण वही मुख्य होता है।

विधेय- वाक्य के जिस भाग में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं; जैसे- अनुराग खेलता है। इस वाक्य में 'खेलता है' विधेय है। विधेय के विस्तार के अंतर्गत वाक्य के कर्ता (उद्देश्य) को अलग करने के बाद वाक्य में जो कुछ भी शेष रह जाता है, वह विधेय कहलाता है, जैसे- लंबे-लंबे बालों वाली

लड़की अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर गई'। इस वाक्य में 'अभी-अभी एक बच्चे के साथ दौड़ते हुए उधर गई' विधेय का विस्तार है तथा 'लंबे-लंबे बालों वाली लड़की' उद्देश्य का विस्तार है।

1. अर्जुन ने जयद्रथ को मारा।
2. कुत्ता भौंक रहा है।
3. तोता डाल पर बैठा है।

इनमें 'जयद्रथ को मारा', 'भौंक रहा है', 'डाल पर बैठा है' विधेय हैं क्योंकि अर्जुन ने, कुत्ता, तोता,-इन उद्देश्यों मारा क्रमशः में विषय के कार्यों के (कर्ताओं), भौंक रहा है, बैठा है, ये विधान किए गए हैं, अतः इन्हें विधेय कहते हैं।

उद्देश्य का विस्तार- कई बार वाक्य में उसका परिचय देने वाले अन्य शब्द भी साथ आए होते हैं। ये अन्य शब्द उद्देश्य का विस्तार कहलाते हैं। जैसे-

1. सुंदर पक्षी डाल पर बैठा है।
2. काला साँप पेड़ के नीचे बैठा है।

इनमें सुंदर और काला शब्द उद्देश्य का विस्तार हैं।

उद्देश्य में निम्नलिखित शब्दभेदो-ं का प्रयोग होता है-

(1) संज्ञाहै। भागता घोड़ा -

(2) सर्वनामहै। जाता वह -

(3) विशेषणहै। होती पूजा सर्वत्र की विद्वान -

(4) क्रियाहो। सा-एक बाहर-भीतर (जिसका) -विशेषण-

(5) वाक्यांशहै। पाप बोलना झूठ -

वाक्य के साधारण उद्देश्य में विशेषणादि जोड़कर उसका विस्तार करते हैं। उद्देश्य का विस्तार नीचे लिखे शब्दों के द्वारा प्रकट होता है-

(1) विशेषण सेहै। करता पालन का आज्ञा बालक अच्छा -

(2) संबंध कारक सेलिया। घेर उसे ने भीड़ की दर्शकों -

(3) वाक्यांश सेहै। मिलता से कठिनाई कारीगर हुआ सीखा काम -

विधेय का विस्तार- मूल विधेय को पूर्ण करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है वे विधेय का विस्तार कहलाते हैं। जैसेहै। विस्तार का विधेय अपने इसमें है। लिखता से पैन अपने वह-

1. कर्म का विस्तार- इसी तरह कर्म का विस्तार हो सकता है। जैसेमित्र-, अच्छी पुस्तकें पढ़ो। इसमें अच्छी कर्म का विस्तार है।

2. **क्रिया का विस्तार**- इसी तरह क्रिया का भी विस्तार हो सकता है।

संदर्भ

- चौधरी, के सरिता, लोक विश्वास और संसाधन संरक्षणः अरुणाचल प्रदेश के विचार, भारतीय लोक जीवन की पत्रिका, वॉल्यूम 56, अंक 56, पीपी. 68–89, 2015।

- आशुतोष कुमार पांडेय, प्रतिबंधित हिंदी कविता और लोकगीत, हिंदी कविता की पत्रिका, खंड 143, अंक 5, पीपी 56–62, 2015।

- अमित शर्मा, दक्षिण एशियाः आधुनिक हिंदी में साहित्यिक प्राधिकरण के लिए दृश्य रणनीतियाँ, दक्षिण एशियाई अध्ययन की पत्रिका, वॉल्यूम 12, अंक 3, पीपी. 8–19, 2014।